



Vol.7

हॉट स्प्रिंग्स

सत्य घटनाओं पर आधारित



सरदार पोस्ट एक शौर्य गाथा ।



9 अप्रैल को गुजरात के रण ऑफ कच्छ में वीरता साहस और रण कौशल की एक अद्वितीय मिसाल रची गई जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने एक पूरी पाकिस्तानी ब्रिगेड को न केवल धूल चटा दी बल्कि उसे पराजित कर पीछे लौटने पर मजबूर कर दिया। दुनिया के युद्ध इतिहासों में दर्ज एक अनूठी शौर्य गाथा ।

वीर भृगुनंदन



यह केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम कीर्ति चक्र प्राप्त करने वाले अमर शहीद भृगुनंदन चौधरी की वीरता, साहस, बलिदान और मित्र भाव की पराकाष्ठा की कहानी है। यह कहानी है उस जवान की जो बारूदी सुरंग में अपनी दोनों टांगें गंवा देने के बावजूद माओवादियों का सामना करता रहा। यह वह स्थिति थी जब माओवादियों के हमले में उसका पूरा दल बिखर गया था और उसके साथी सिपाही का भी दाहिना बाजू बारूदी सुरंग के विस्फोट में उड़ गया था। उस स्थिति में भी उसने न केवल माओवादियों के एक बहुत बड़े दल को रोके रखा बल्कि अपने घायल साथियों की भी मदद की।

शूरवीर प्रकाश



एक शौर्य चक्र और छः पुलिस वीरता पदकों से सम्मानित देश के सर्वाधिक अलंकृत पुलिस अधिकारी प्रकाश रंजन मिश्र के हैरत अंगेज कारनामों से भरपूर एक चित्रकथा। जानिए कैसे एक वीर अधिकारी ने एक गोली जांघ में, चार गोलियां दाहिने कंधे के नीचे सीने में और एक गोली कान को छील कर निकल जाने के बावजूद, माओवादियों के विरुद्ध एक बड़े अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।



हॉट स्पिंग्स



प्रस्तुति: संजय गुप्ता
लेखन: नितिन मिश्रा
चित्रांकन: हेमंत कुमार
स्याहीकार: विनोद कुमार, ईश्वर आर्ट
आवरण: हेमंत कुमार एवं ईशान त्रिवेदी
रंग सज्जा: सुनील दस्तुरिया
शब्दांकन: मंदार गंगेले
संपादन: मनीष गुप्ता

Published By: Raj Comics (an imprint of Raja Pocket Books) on behalf of Directorate General C.R.P.F.

 **Raj Comics**
330/1, Burari
Delhi-110084
www.rajcomics.com
Ph. 01127611410

Copyright © 2016 Central Reserve Police Force

Printed By: Prince Print Process

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopy, recording or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher- For permission requests write to the publisher addressed “Attention: Permissions Coordinator” at the address below.

Inspector General (Operations)
Central Reserve Police Force
Email: igops@crpf.gov.in

समय: प्रातः 6 बजे ।

लेह से लद्दाख के हॉट स्पिंग्स क्षेत्र को जाता दुर्गम पथरीला पहाड़ी मार्ग जहां ना ही कोई सड़क थी और ना ही कोई यात्रा का साधन।

वहां का जर्जर-जर्जर सी.आर.पी.एफ. के वीर जवानों के दृढ़ कदमों के पदचापों से गुंजायमान हो रहा था।

दृढ़ कदम, जिनकी हर थाप में देशभक्ति के जज्बे और कर्तव्यपरायणता की गूंज थी।

कदमों की रफ्तार ना थमनी चाहिए ना धीमी पड़नी चाहिए जवानों।

जज्बे की गूंज मंजिल तक भी पहुंचनी चाहिए कि उसके मुहाफिज आ रहे हैं।

पिछले चौदह दिनों से उन दुर्गम पथरीले रास्तों को रेंदते हुए आखिरकार अपने लक्ष्य तक पहुंच ही गए थे वे फर्ज के मतवाले।

हमें यहीं अपना ऑब्जरवेशन कैंप लगाना है। काम में जुट जाओ जवानों।

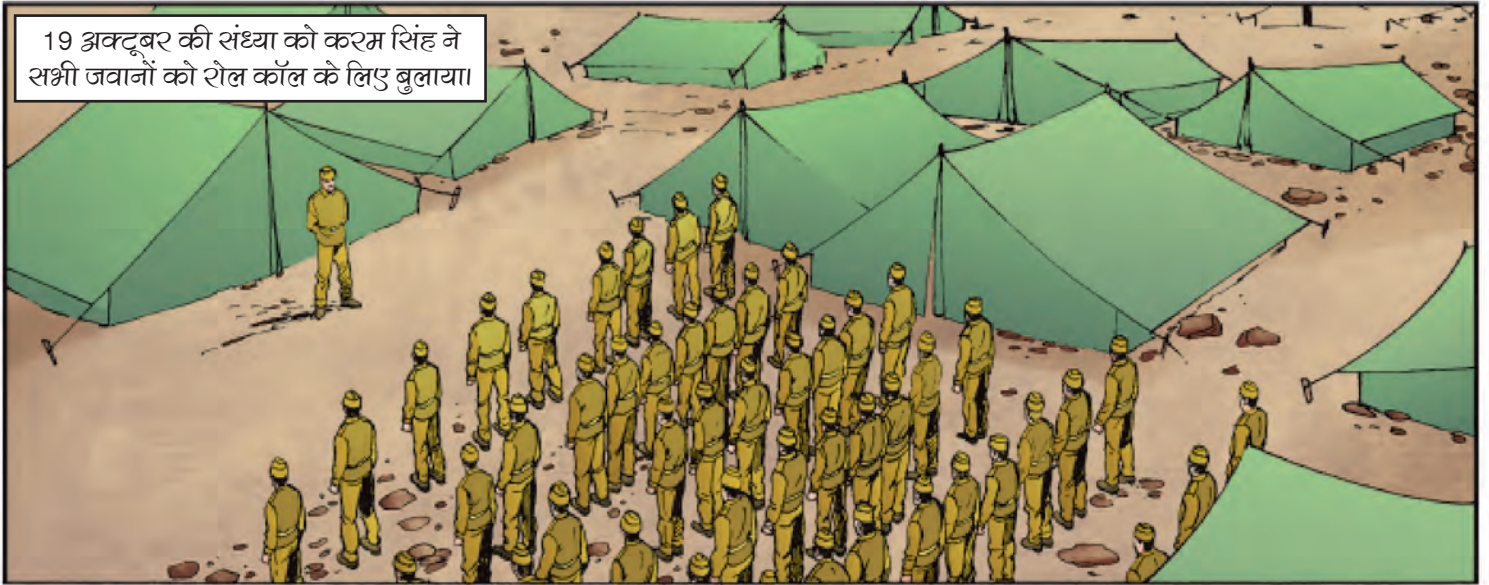
लेकिन चौदह दिनों का वह कठिन सफर भी उनके फर्ज की स्फूर्ति के सामने थका महसूस कर रहा था शायद।

बिना किसी थकान, बिना किसी शिकन के सी.आर.पी.एफ. जवानों ने ऑब्जरवेशन कैंप लगाने का कार्य शुरू किया।

शाम ढलने तक हॉट स्पिंग्स पर सी.आर.पी.एफ. का ऑब्जरवेशन कैंप लग चुका था।

ऑब्जरवेशन कैंप लगने के पंद्रह दिनों तक विभिन्न टुकड़ियां पेट्रोलिंग के लिए जाती रहीं।

19 अक्टूबर की संध्या को करम सिंह ने सभी जवानों को रोल कॉल के लिए बुलाया।



करम सिंह ने दोनों को आश्वासन दिया।



20 अक्टूबर, 1959

अगले दिन सुबह तड़के ही जवानों की अलग-अलग टुकड़ियां हॉट स्पॉट्स के आस-पास के क्षेत्रों पर दुश्मन की टोह लेने निकल पड़ीं।



कांस्टेबल मोहम्मद खालिद और सोनम दोरजे भी एक लोकल कुली के साथ अपने गंतव्य के लिए निकल पड़े।



उनके सामने था एक और दुर्गम सफर।

संभल कर, दोरजे! जरा सा पैर फिसला तो यह पहाड़ी दर्रा लील जाएगा।

फिक्र मत करो, खालिद भाई! यह जान देश पर कुरबान होने के लिए है, इन पहाड़ों में वह दम कहां।



पर वे नहीं जानते थे कि यह सफर उन्हें जिस विषम मुकाम तक ले जाने वाला है उसकी भयावहता आने वाले समय में देश के इतिहास में एक रक्तिम अध्याय जोड़ने वाली थी।







मोहम्मद खालिद ने रेंगते हुए पठार
के मुहाने पर पोजीशन ले ली।

दोरजे! ये
चीनी सौल्जर हैं।
घुसपैठ कर रहे हैं ये
हरामजादे!!



खालिद भाई, ये
कमीने हमारी रेंज में
हैं। ठोंक डालते हैं
सालों को।

नहीं, दोरजे! दिल तो मेरा भी
यही कह रहा है लेकिन अभी इन लोगों ने
हमें देखा नहीं है शायद। हो सकता है कि इनके
अलावा और भी चीनी आस-पास हों जोकि
गोलियां चलाने से सतर्क हो जाएंगे।



करम सिंह साहेब
का शक सही था। हमें वापस
ऑब्जरवेशन कैंप लौटना होगा
और उन्हें इसकी खबर
देनी होगी।

सही कहते
हो खालिद
भाई!



दुश्मन की पोजीशन भांपने के लिए दोनों ने दूरबीन से आंखें
लगाई पर तब तक दुश्मन आंखों से ओझल हो चुका था।

अरे! ये
कहां गायब हो
गए?





दोनों जवानों और कुली को लेकर चाइनीज सोल्जर वहां से लगभग 5-6 किलोमीटर दूर अपने कैम्प में पहुंचे।



साथ 5 लगे।

शाम ढलते ही सभी भारतीय जवान ऑब्जरवेशन कैंप तक वापस लौट आए सिवाय मोहम्मद खालिद, सोनम दोरजे और उनके कुली के।

रोल कॉल में सभी जवान वापस आ गए हैं सिवाय मोहम्मद खालिद और सोनम दोरजे के। कहीं किसी मुश्किल में तो नहीं फंस गए वे दोनों?



तुरंत ही एक सर्च पार्टी सोनम दोरजे एवं मोहम्मद खालिद को खोजने के लिए निकल पड़ी।

गंतव्य स्थान पर पहुंच कर सर्च पार्टी को घोड़ों के हूफ मार्क और जवानों के बूट्स के निशान मिले।

ये घोड़ों के पैरों के निशान देखो।

कोई जंगली घोड़ा भी हो सकता है साहब।



नहीं, निशानों से साफ पता चलता है कि इन घोड़ों के पैरों में नाल लगी हुई है। यह जंगली घोड़े नहीं हैं।

यह देखिए साहेब, बूट्स के निशान।



हुम्मा! इनमें से ये दो निशान हमारे जवानों के बूट्स के हैं, पर ये बाकी बूट इम्प्रेसन्स हैं तो मिलिट्री बूट्स के ही पर ये हमारे जवानों के नहीं हैं।

साहब को फौरन खबर करनी होगी।



जवानों ने ऑब्जरवेशन कैंप वापस लौट कर करम सिंह और एस.पी.त्यागी को रिपोर्ट किया।

जवानों को घोड़ों और पैरों के निशान मिले हैं करम सिंह साहब, ऐसा लगता है कि हमारे दोनों जवानों को बंधक बनाकर वहां से ले जाया गया है।

इसमें अब शक की कोई गुंजाइश नहीं है त्यागी।

अपने जवानों को तैयार करो त्यागी, कल सुबह हम तड़के ही यहां से टेकरी के लिए कूच करेंगे।

ठीक है करम सिंह, जी! मैं जवानों को तैयार करता हूं! शुभरात्रि!

21 अक्टूबर, 1959
6:00 AM

अगली सुबह करम सिंह और एस.पी.त्यागी के नेतृत्व में सी.आर.पी. एफ. के जवान पूरे लाव-लश्कर के साथ टेकरी की ओर रवाना हुए।

हम खाली हाथ वापस नहीं लौटेंगे, या तो मारेंगे या मरेंगे।

जो बोले सो निहाल!!

मेरे शेर जवानों! फर्ज पुकार रहा है। इन हरामजादे चीनियों को बता देना है कि सच्चा हिन्दुस्तानी अपने देश और अपने भाई के लिए जान दे भी सकता है और जान ले भी सकता है।

साला सारी आकाल!!!

सफर के दौरान कारतूस और असलहा उन्होंने घोड़ों और याक पर लाद दिया।

भारत माता की...

जय

थोड़ी ही देर में छुपा हुआ दुश्मन
सामने नजर आने लगा।



ठहरो
जवानों!

करम सिंह ने चीनियों को
सफेद झंडी दिखाई जोकि
इशारा था कि हम लड़ाई नहीं
शान्ति से बात करना चाहते हैं।



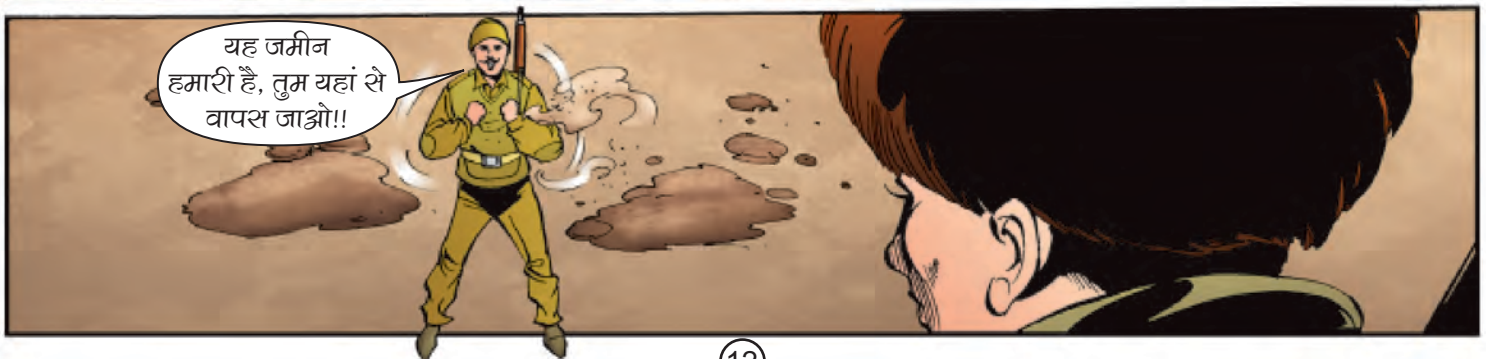
चीनी ने भी सफेद झंडी दिखाई।



करम सिंह ने दोनों हाथों से जमीन को
थपकाया और अपनी मुट्ठी में धूल भर ली।



यह जमीन
हमारी है, तुम यहां से
वापस जाओ!!

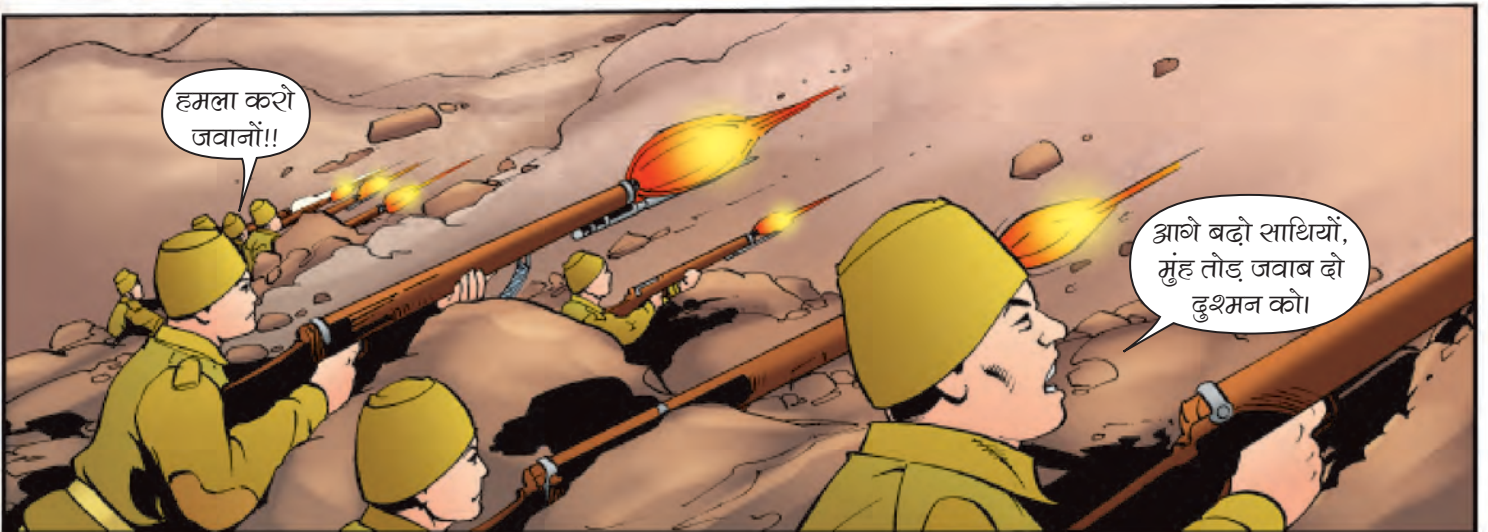
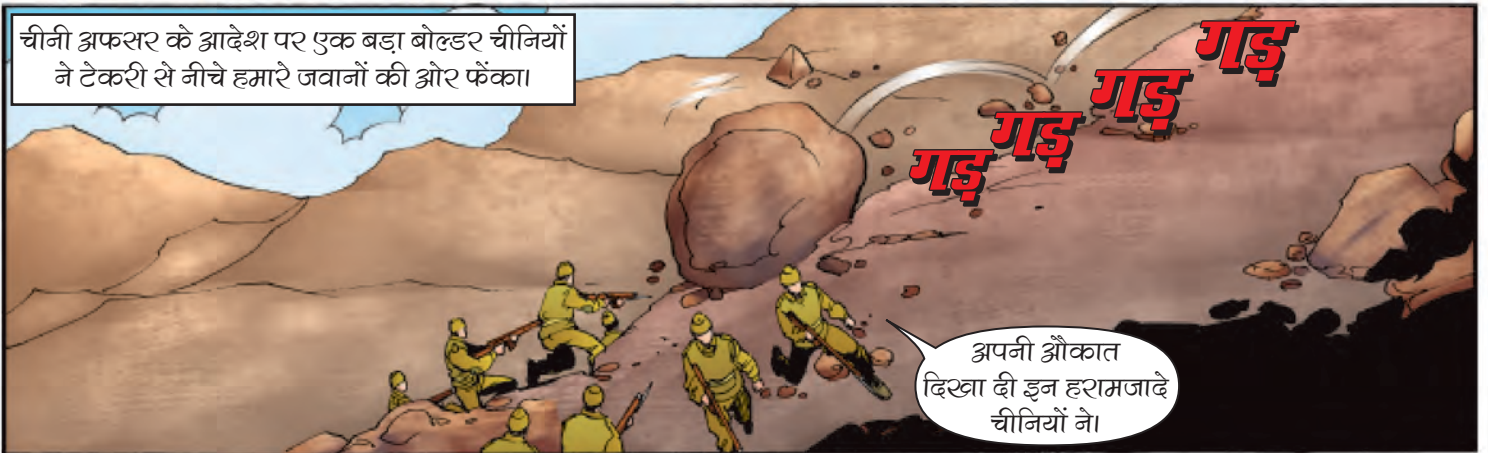




चीन की सेना टेकरी पर अपना मोर्चा बनाए हुए थी। कुछ ही देर में ऊपर टेकरी से चीनी सिपाहियों ने सी.आर.पी.एफ. जवानों को चारों ओर से घेर लिया था।



चीनी अफसर के आदेश पर एक बड़ा बोलडर चीनियों ने टेकरी से नीचे हमारे जवानों की ओर फेंका।



जवानों की हर एक गोली दुश्मन को अपना निशाना बना रही थी।



दुश्मन के खेमे में खलबली मच गई।



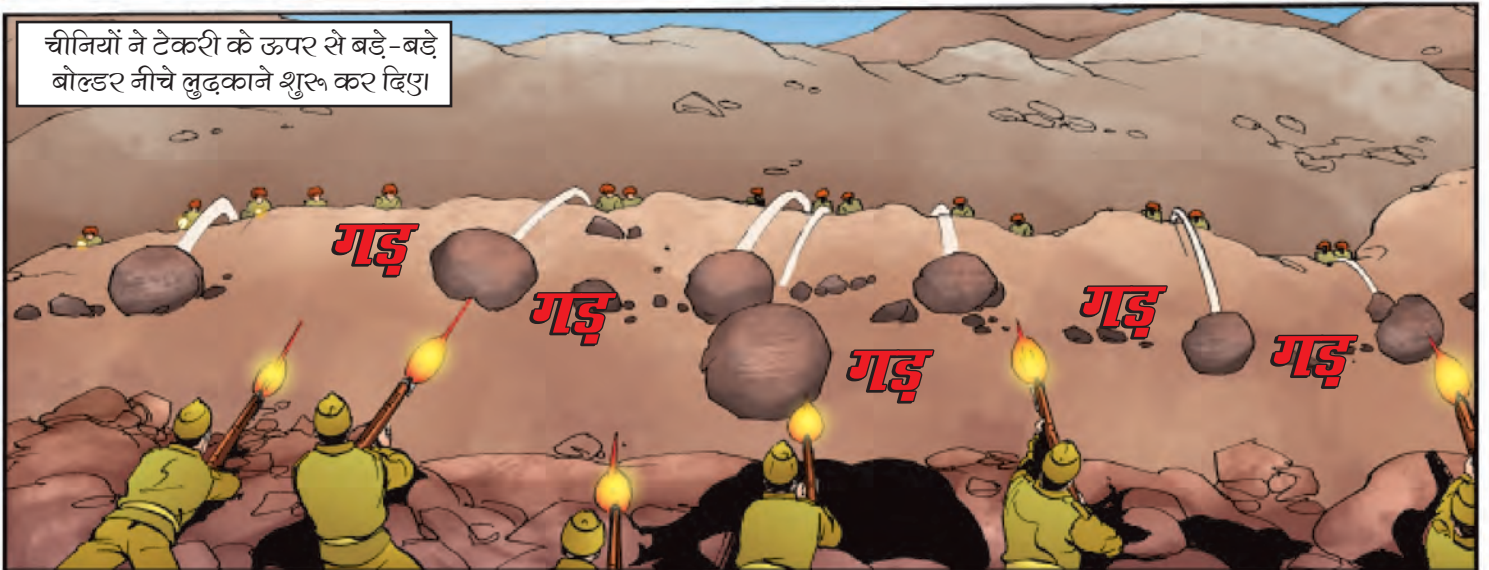
जल्द ही चीनियों के अफसर को समझ आ गया कि सीधी लड़ाई में हिन्दुस्तानी जवानों से वो मोर्चा नहीं जीत सकते।

दुश्मन ने एक बार फिर छल का सहारा लिया।

":-':/+#!@-:++
--+/++



चीनियों ने टेकरी के ऊपर से बड़े-बड़े बोल्टर नीचे लुढ़काने शुरू कर दिए।



लुढ़कते हुए बोलडर्स के साथ ही चीनियों ने
हथगोले फेंकने शुरू कर दिए।



चीनियों ने उस स्थान के पास ही हथगोले फेंके जहां असलहों से लड़े हुए
घोड़े और याक खड़े थे। भीषण धमाकों से जानवर बिदक गए।



ऐ!! घोड़ों को पकड़ो!! हमारा
सारा अम्युनेशन इन जानवरों पर
लड़ा है, अगर यह भाग गए तो हम
निहत्थे हो जाएंगे।



जानवरों के भाग जाने से हमारे जवानों के पास बहुत ही सीमित मात्रा में कारतूस बचे थे, सारा गोला-बारूद घोड़े और याक लेकर भाग चुके थे।

हमारे राउंड्स खत्म हो रहे हैं।

किलक-किलक

पहाड़ी के ऊपर से फायर कर रहे दुश्मनों की गोलियां वीर सपूतों को छलनी कर रही थीं।

धायं धायं

आह!

देश के बेटे, माटी के सच्चे सपूतों के लहू से उनकी मातृभूमि रक्तिम हो रही थी।

धायं

फिर भी उनकी अंतिम सांस में भी जुबान पर अपने देश का ही नाम था, अपनी भारत माता का ही जयगान था।

भारत माता की...

ज...जय!!!!





शहीद होने से पहले अदम्य साहस और बहादुरी का परिचय देते हुए हंगीत ने दुश्मन पर पांच फायर झोंके और देश के दुश्मनों को डेर करके...



...भारत माता का लाल, अपनी माता के आगोश में सदा के लिए सो गया।

भ...भारत
माता की...ज...
जय



दुश्मन का डट कर मुकाबला करते हुए एस.पी. त्यागी उन्हें परास्त करने की रणनीति बना रहे थे।

ताशी! ओ
ताशी!

हां साहेब!

पीछे से ऊपर
जाकर घेरो इन
सालों को!



ताशी टेम्पल के साथ बारह-तेरह सिपाहियों की टुकड़ी ने पीछे के रास्ते से पहाड़ी पर चढ़ाई की।



ताशी टेम्पल साधी जवानों के साथ पीछे के रास्ते से चीनियों के मोर्चे से भी ऊपर पहाड़ी पर पहुँच गये।



ताशी और साधी जवानों ने ऊपर से चीनियों पर फायरिंग शुरू कर दी जिसमें उनका मेजर डेर हो गया।



हिन्दुस्तानी सपूतों ने कहर मचा दिया। चीनी घुसपैठिये कुत्तों की तरह डेर होकर गिरने लगे।







करम सिंह ने उनसे घायल मक्खन लाल की जान बक्श देने की गुहार लगाई।





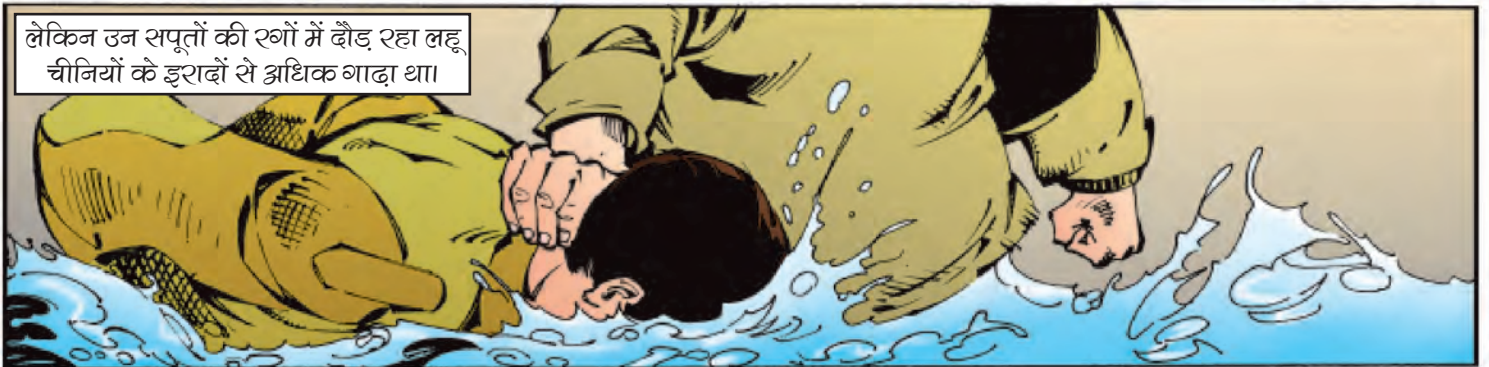




जब चीनियों को समझ आया कि वो किसी भी तरह हिन्दुस्तानी जवानों के हौसले को तोड़ नहीं सकते तो उन्होंने अमानवीयता की भी सारी हदें पार कर दीं।



लेकिन उन सपूतों की रगों में दौड़ रहा लहू, चीनियों के इरादों से अधिक गाढ़ा था।



उन जवानों ने देशभक्ति का जो फौलाद कवच की तरह अपने वजूद पर चढ़ाया था उसे तोड़ने की कूवत चीनियों की बर्बरता में भी नहीं थी।



जिस्म टूट गऽ लेकिन इरादे वैसे ही बुलंद थे।

अंततः हिन्दुस्तानी जजबे के सामने चीनियों की बर्बरता को हथियार डालने पड़े।

ये बोलते हैं कि कल सुबह तुम सशस्त्री को जो जिंदा हैं और जो मारे गए हैं वापस हिन्दुस्तान भेज दिया जाएगा।

अगली सुबह चीनियों ने हॉट स्पिंग्स पर हिन्दुस्तानी जवानों को मृतकों के शवों के साथ हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि के सुपुर्द कर दिया।

जवानों के अदम्य साहस और जिन शहीदों ने देश के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी उनकी याद में हर साल 21 अक्टूबर का दिन 'पुलिस कोमेमोरेशन डे' के रूप में मनाया जाता है। हमारा इन वीरों को शत-शत नमन है।





1953 के बाद से ही सी.आर.पी.एफ. को दिए गए अत्यंत दुष्कर कार्यों में से ही एक कार्य था अक्साइचीन के बरार में लगी भारत-तिब्बत सीमा की सुरक्षा करना। अक्साइ क्षेत्र का रहने के लिए अनुपयुक्त निर्जन पहाड़ी-जंगली इलाका और हड्डियों तक को जमा देने वाली ठंड भी सी.आर.पी.एफ. को उनके कर्तव्य से डिगा नहीं पाए। सी.आर.पी.एफ. के जवान दिन-रात की चिंता किए बिना अपनी देश की सीमा की रक्षा में लगातार जुटे रहते थे। 1959 में सीमापार चीनियों की बढ़ती हुई हलचल के प्रति सचेत एवं खतरे को भांपते हुए सी.आर.पी.एफ. की एक छोटी टुकड़ी ने तिब्बत की सीमा की ओर रुख किया, इस बात से अंजान कि उनके कदम उन्हें भारत और सी.आर.पी.एफ. के इतिहास में एक रक्तिम अध्याय की ओर ले जाने वाले थे।

सी.आर.पी.एफ. के बहादुर जवानों ने 1959 में चीनियों द्वारा किये गए प्रथम हमले के प्रयास को नेस्तनाबूत किया था। 21 अक्टूबर 1959 को लद्दाख के 'हॉट स्प्रिंग्स' क्षेत्र में सी.आर.पी.एफ. की एक छोटी सी टुकड़ी पर चीनी घुसपैठियों द्वारा भारत की धरती पर

अवैध रूप से कब्जा करने के उद्देश्य से हमला किया गया। चीनी सेना के सामने ना केवल सी.आर.पी.एफ. की टुकड़ी के जवानों की संख्या काफी कम थी बल्कि चीनियों के आधुनिक स्वचालित हथियारों से सुसज्जित हमले के जवाब में सी.आर.पी.एफ. के प्रत्येक जवान ने खुद के शरीर को चीनियों के सामने एक अभेद्य ढाल के रूप में प्रस्तुत किया! सी.आर.पी.एफ. के जवानों के मन में उस समय उनके अडिग इरादों के साथ ही केवल एक बात थी, किसी भी कीमत में अपनी मातृभूमि की रक्षा करना! उस समय उनके लिए देश व देश की रक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं था। चीनियों के उस कायरतापूर्ण हमले का सभी सी.आर.पी.एफ. के जवानों ने मुंहतोड़ जवाब दिया। मातृभूमि की रक्षा करते हुए सी.आर.पी.एफ. के 10 जवान वीरगति को प्राप्त हुए!

यदि उस दिन देश के वीर जवानों ने मातृभूमि के सम्मान और रक्षार्थ अपना बलिदान नहीं दिया होता तो दुश्मन अपने नापाक मंसूबों में कामयाब हो जाता! उस घटना के बाद से ही हॉट स्प्रिंग्स सी.आर.पी.एफ. के लिए एक पवित्र क्षेत्र है और जवानों के अद्वितीय साहस और बलिदान की स्मृति में 21 अक्टूबर का यह दिन सम्पूर्ण देश के पुलिस बलों के द्वारा शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन सभी वीर शहीदों को हमारा कोटिश: नमन।



डी.एस.पी करम सिंह



अमर शहीद श्री शिव नाथ प्रसाद (कॉन्सटेबल)



अमर शहीद श्री धरम सिंह (कॉन्सटेबल)



अमर शहीद श्री सरवन दास (कॉन्सटेबल)



अमर शहीद श्री पूरन सिंह (कॉन्सटेबल)



अमर शहीद श्री ईमान सिंह (कॉन्सटेबल)



अमर शहीद श्री नारबू लामा (कॉन्सटेबल)



अमर शहीद श्री बेग राज (कॉन्सटेबल)



अमर शहीद श्री शेरिंग नोरबू (कॉन्सटेबल)



अमर शहीद श्री हंगजीत सिंह (कॉन्सटेबल)



अमर शहीद श्री माखन लाल (कॉन्सटेबल)

जाँबाज इलंगो



छत्तीसगढ़ के बीजापुर में माओवादियों पर काल बन कर टूट पड़े तमिलनाडू के एक साधारण ग्रामीण परिवार से आए श्री एस. इलंगो की शौर्य गाथा जिन्हें तीन वीरता पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री एस. इलंगो देश के उन दिलेर अधिकारियों में गिने जाते हैं जिन्होंने अपने साहस व सूझबूझ से देश में आतंकवादियों, माओवादियों और देशद्रोहियों के विरुद्ध कई बड़े अभियानों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है।

अयोध्या के शूरवीर



5 जुलाई, 2005 स्वचालित रायफल्स, हथगोलों और रॉकेट लांचर्स से लैस आतंकवादियों को अयोध्या स्थित विवादित स्थल को ध्वस्त करने से रोकना किसी भी सुरक्षा बल के लिए एक दुष्कर कार्य हो सकता था, लेकिन उन आतंकवादियों और विवादित स्थल में मौजूद दर्शनार्थियों के बीच एक अभेद्य सुरक्षा दीवार बन कर खड़े हो गए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी. एफ.) की 33वीं बटालियन के 'डी' कंपनी के जवान, जिन्होंने ना केवल उन सभी आतंकवादियों को मार गिराया बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि विवादित स्थल और दर्शनार्थियों को लेश मात्र भी क्षति न पहुंचे!

दिलेर दिव्यांशु



नक्सलियों के बीच भय के प्रतीक श्री दिव्यांशु की शौर्य गाथा। जिन्होंने अपने बाल्यकाल में ही केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का हिस्सा बनने का निर्णय ले लिया था। सहायक कमाण्डेंट श्री दिव्यांशु अपने अडिग इरादों और दृढ़ निश्चय के बल पर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में भर्ती हो कर कोबरा कमांडो के रूप में कई दुष्कर ऑपरेशनों को निर्भयता से अपने सफल अंजाम तक पहुंचा कर दो बार पुलिस पदक से सम्मानित हुए।

21 अक्टूबर, 1959- लद्दाख के हॉट स्प्रिंग्स क्षेत्र में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने मातृभूमि की रक्षा हेतु अपने साहस और पराक्रम द्वारा चीन की सैनिक टुकड़ी से जमकर लोहा लिया। मातृभूमि की रक्षा का कर्तव्य निभाते हुए देश के 10 बहादुर जवान वीरगति को प्राप्त हुए। देश के उन वीर सपूतों के बलिदान की स्मृति में 21 अक्टूबर को देश के सभी पुलिस बलों द्वारा शहीद स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है!

